

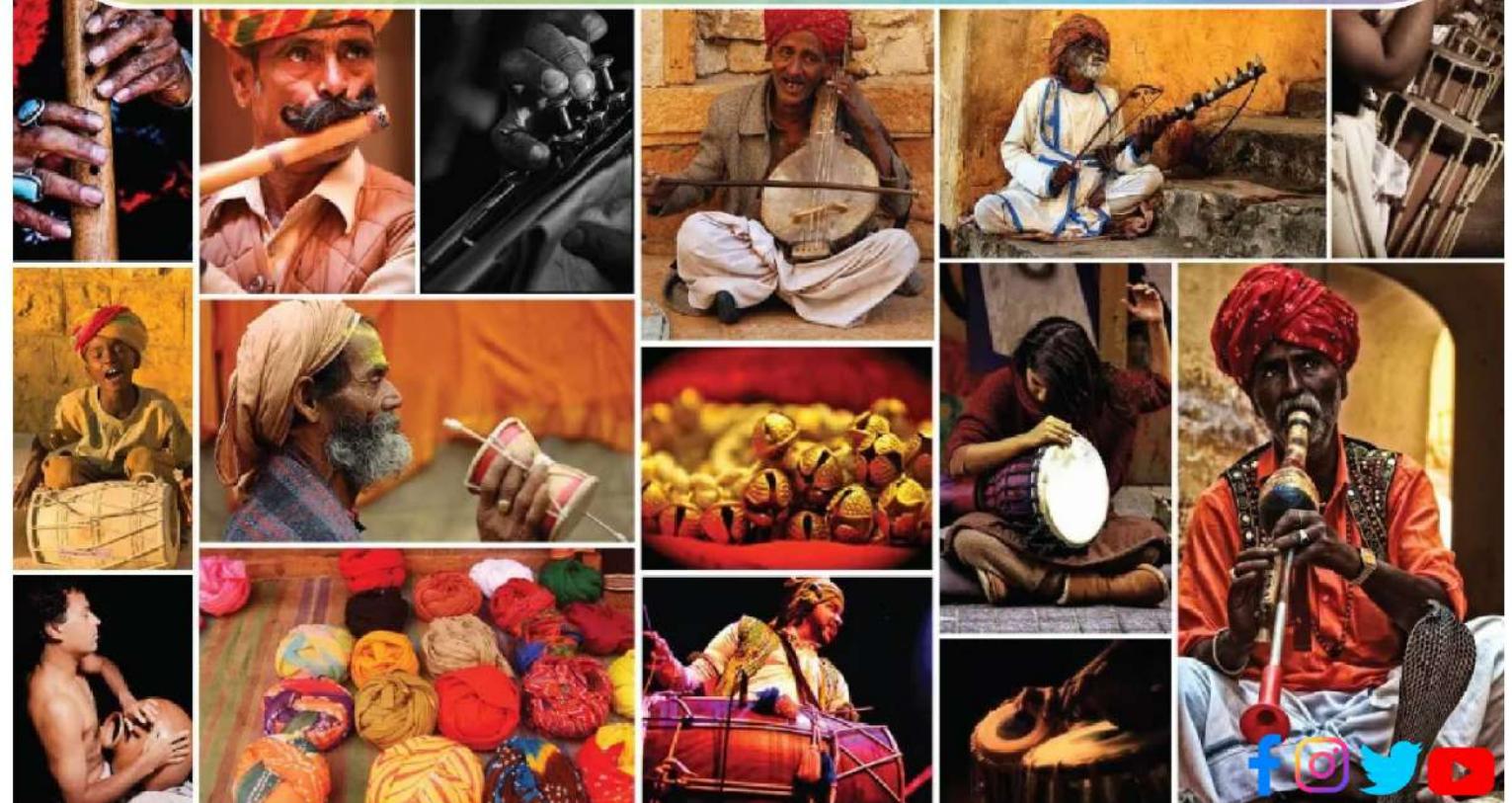


India's First E Magazine Dedicated to Indian Music
Monthly ,Bilingual

संगीत वन्दन

December 2023 Year 1 Issue 9

भारतीय संगीत का दर्पण - "लोक संगीत"





Dr. Vandana Khurana
Asst. Prof. Music Vocal,
Rajasthan Sangeet Sansthan,
Govt. P G College, Jaipur (Raj.)

संपादक की कृति से...

संगीत वन्दन के सभी पाठकों को सादर प्रणाम

विविधिता में एकता... हमारे भारत देश की संस्कृति की एक अनूठी विशेषता है और इसका प्रतिविंध दिखता है हमारे लोक संगीत में। जन-जन की भावनाओं को प्रकट करने वाला तथा हमारे त्योहारों, रीति-रिवाजों को परिपूर्ण करने वाला लोक संगीत देश के प्रत्येक प्रदेश के रंगों से सजा है। बहुरंगी जातियों, अनेक धर्मों के लोग, बहुरंगी संस्कृति एवं बहुरंगी भाषाएँ यहाँ के संगम स्थल हैं। यहाँ के जनजीवन में विविधता एवं विभिन्नता परिलक्षित होते हुए भी सांस्कृतिक एकता यहाँ के लोगों के जीवन में व्याप्त है। यह भारतीय संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। किसी भी देश - प्रदेश का संगीत उसके लोकजीवन की सभ्यता - संस्कृति का दर्पण है। लोकसंगीत और लोकसंस्कृति का अटूट सम्बन्ध है तथा लोकसंस्कृति को लोकसंगीत से अलग नहीं किया जा सकता। सामाजिक जीवन का कोई भी अनुष्ठान या लोकोत्सव लोकसंगीत के बिना अधूरा रहता है। लोकसंगीत के माध्यम से सांस्कृतिक परम्पराएँ लम्बे समय तक जीवित रहती हैं। अतः किसी भी प्रदेश का लोकसंगीत यहाँ की संस्कृति का अविभाज्य अंग होता है। लोकसंगीत में परंपरा अनुसार स्थानीय भाषाओं में होने वाले गीत, वृत्त्य आदि शामिल होते हैं। इसमें भारतीय संगीत का दर्शन मिलता है, जो भारतीय संस्कृति की देन है।

अतः “भारतीय संस्कृति के साथ विकसित संगीत ही भारतीय लोकसंगीत कहलाता है”।

हम संगीत वंदन का दिसंबर संस्करण हमारे भारत देश की पहचान तथा विरासत - ‘लोक संगीत’ को समर्पित करने जा रहे हैं।

सभी लेखकों से ई-पत्रिका हेतु संगीत से संबंधित स्वतंत्र आलेख एवं ई पत्रिका के नियमित भागों (किताबों की बातें, लोकरंग, news and events एवं फिल्म संगीत) पर आधारित आलेख एवं सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

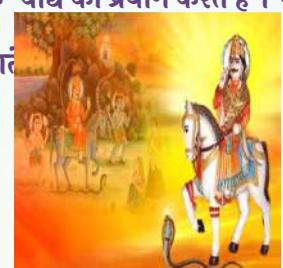
राजस्थान के लोक वाद्य

राजस्थान में शास्रोक्त देवी-देवताओं के साथ ही लोक देवी-देवताओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। राजस्थान में जिन व्यक्तियों ने मानव रूप में जन्म लेकर समाज में लोक कल्याणकारी और असाधारण कार्य किया उन्हें समाज ने देवी देवताओं की मान्यता प्रदान की और उनकी पूजा की यथा - रामदेव जी, तेजाजी, गोगाजी, पाबूजी, देवनारायण जी, भेरुजी, करणी माता, कैला देवी, कुल की देवियां इत्यादि। इन सभी देवी देवताओं की पूजा, आराधना, आरती संगीत कला के माध्यम से की जाती है। संगीत की स्वर लहरी के साथ हृदय के भावों की अभिव्यक्ति सरलता से हो जाती है। भावों को स्वर शक्ति और लय शक्ति गतिमान करती है। स्वर शक्ति का प्रयोग मनुष्य गाकर करता है और लय शक्ति के लिए वायों का प्रयोग करता है। देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए विभिन्न लोक वायों का प्रयोग दिखाई देता है।

राम देव जी ÷ रामदेव जी के भक्त 'तंदूर' वाद्य के साथ गाते हैं। ढोलक एवं मंजीरा वाद्य के साथ लय दर्शाते हैं। रामदेव जी की आराधना में स्त्रियां तेरहताली नृत्य करती हैं। यह नृत्य शरीर के विभिन्न अंगों पर मंजीरे बांधकर मंजीरों पर विभिन्न प्रकार से मंजीरे द्वारा आधात के साथ किया जाता है।



गोगाजी ÷ लोक देवता गोगा जी के भोपे 'डैरु' वाद्य का प्रयोग करते हैं। इसके साथ ढोल, थाली, कटोरा, सांकल, चिमटा आदि वायों को बजाकर लय प्रकट करते हैं और नाचते हैं। भेरुजी के भोपे भी 'डैरु' वाद्य बजाते हैं। भेरुजी के भोपे 'मशक' वाद्य का प्रयोग करते हैं। मशक वाद्य का प्रयोग स्वर के लिए और डैरु का प्रयोग लय के लिए किया जाता है। पाबूजी के भोपे 'माटा' वाद्य बजाते हैं। मिट्टी के बने चौड़े मुँह के माटों पर चमड़ा मढ़ा जाता है। दो माटों को बराबर रखकर उन्हें हाथों की थाप से बजाया जाता है। पाबूजी की फड़ बांचने वाले भोपी - भोपी स्वर के लिए 'रावणहत्या' वाद्य बजाते हैं और रावण हत्या के गज के किनारे पर घुंघरु बंधे रहते हैं जो वाद्य बजाने के साथ ही लय दर्शाते हैं। फड़ बांचने के साथ ही यह नृत्य भी करते हैं।



तेजाजी ÷ वीर तेजाजी के पुजारी माटे पर कांसा धातु की थाली उल्टी रखकर बजाते हैं। लय के लिए तेजाजी के गीत गाते समय 'अलगोजा' वाद्य भी बजाते हैं। **देवनारायण जी** के भोपे 'जंतर' वाद्य का प्रयोग करते हैं आजकल इस वाद्य का प्रयोग करने वाले बहुत कम दिखाई देते हैं।

इनके अतिरिक्त डूंगरी जी - जयाहर जी की गाथा गाने वाले भी रावणहत्या बजाते हैं। राजस्थान में देवियों की बहुत मान्यता है। करणी माता, कैला देवी, हरगांव और घर की अपनी कुल देवियों की पूजा उनकी स्तुतियां गाकर ही की जाती है। हर देवी के मंदिर में नगड़ा वाद्य बजाया जाता है, थाली ढोल, मंजीरे, ताशा आदि वायों का प्रयोग भी देवी देवताओं की पूजा अर्चना में देखा जाता है।



डा. लक्ष्मी रानी मारुर
सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर संगीत कंठ^र
राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर।

लोक कलाओं में लोक संगीत का समन्वयक दृष्टिकोण

लोक का अर्थ विराट जन समुदाय है जहां समिष्ट का जीवन व्यापक चेतना के एक सम स्तर पर रहता, आंदोलन होता रहता है। लोक में भूमि और जन दोनों के अस्तित्व की अनुभूति का भाव है। ऋग्वेद में लोक शब्द का प्रयोग स्थान व भवन के रूप में प्राप्त होता है ऐतरीय उपनिषद में ईश्वर द्वारा निर्मित तीनों लोकों का उल्लेख है यहां भी लोक शब्द का पर्याय भवन अथवा संसार से है। लोक का अभिव्यक्त स्वरूप वह सामान्य जन समूह है जो अपनी नैसर्गिक प्रकृति के सौंदर्य की दिव्य ज्योति से कल्याणमयी संस्कृत का निर्माण करता है। इस प्रकार लोक का अर्थ स्वाभाविक मानस-समाज से है जिनकी भावनाओं, विचारों, परंपराओं, क्रियाओं एवं समस्त मान्यताओं में वास्तविक कल्याण के तत्व विद्यमान हैं। इसी को हम लोक संस्कृति भी कह सकते हैं। इस समाज में विद्यमान जन समुदायों की भावनाओं की सुंदर अभिव्यक्ति विविध उपादानों द्वारा परिलक्षित होती है जिन्हें लोक संस्कृति भी कह सकते हैं। प्रत्येक युग में विभिन्न जलवायु स्थान परिवेश से अभिभूत समाज में जाने अनजाने मनोरंजन व विभिन्न अवसरों पर पृथक पृथक कलाओं का निर्माण होता है, वे उस समाज की संस्कृति की रीड़ होती है जिनसे उनकी संस्कृति अभिजात्य परिवेश का आभास होता है।



लोक कलाओं की महत्ता एवं उसकी उपादेयता के समन्वय में हमारे भूतपूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री जवाहरलाल नेहरू के उद्घार युक्ति संगत प्रतीत होते हैं “लोक कलाओं में हमको अपने उस सांस्कृतिक वैभव को देखने का अवसर मिलता है जिसने हमारे देश को एकता के सूत्र में सहेज रखा है” उक्त वक्तव्य के अनुसार सांस्कृतिक वैभव राशि को परिलक्षित करने वाली संचित लोक कलाएं हैं जिनके द्वारा हमारे सांस्कृतिक अक्षुण्ण सनातन परिवेश के दर्शन होते हैं।

प्रमुख लोक कलाओं में लोकनाट्य, लोक नृत्य, लोकगीत, लोक वाय व लोक संगीत समन्वित हैं, जिसे खेतों की मेलों पर, त्योहार पर विवाह आदि अवसरों पर, दिनभर की कलांत अवस्था को मिटाने पर मन को विश्रांति देने के अवसर पर कभी भी ग्रामीण परिवेश में सुना जा सकता है। आदिकाल से ही भारत की सांस्कृतिक धरोहर संगीत, नृत्य व काव्य, नाटक से परिपूर्ण रही है। स्वयं भरत मुनि के कथनानुसार हम समस्त लोक जनार्थ रंजन हेतु पृथक पृथक बिंबों का निर्माण करते हैं। अपनी सांस्कृतिक परिवेश को सहजने हेतु लोक संगीत का विशेष महत्व है। भारत के विभिन्न प्रांतों एवं समाज व प्रादेशिक संस्कृति के अनुसार भिन्न-भिन्न अवसरों पर जैसे ईश्वर की पूजा करने में, श्लोक, पाठ, आरती, परिश्रम थकान को हरने वाले गीत, ग्रामीण अंचलों में वैवाहिक अवसरों त्योहार व संस्कारों पर गाए जाने वाले गीत परंपरागत रूप से प्रवाहित होते रहते हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को विरासत अनुसार मिलते जाते हैं।

यह गीत अत्यंत सरल शब्दावली व बोलचाल की भाषा में निबद्ध हैं। लोकगीत अंग्रेजी भाषा के शब्द folk song का रूपांतरण है जिससे शास्त्रीय बंधनों से मुक्त रहने के कारण अनुकरण मात्र से ही सीखा जा सकता है। गुरुदेव रवींद्रनाथ ने लोकगीतों को संस्कृत का सुखद संदेश ले जाने वाली कला कहा है। महात्मा गांधी के अनुसार लोकगीत जनता की भाषा है जो हमारी संस्कृति के पहरेदार हैं। कश्मीर की घाटियों में गुजित लोक संगीत, बंगाल का रवींद्र संगीत, पंजाब का भांगड़ा गिद्दा, असम का बीहू, महाराष्ट्र की लावणी, राजस्थान का घूमर-मांड, गुजरात का गरबा, प्रत्येक प्रांत अपने वातावरण व परिवेश के अनुसार विशेषताएं लिए हुए हैं।

कई प्रांतों की जनजातियां तो लोक संगीत से जीविकोपार्जन भी करती हैं। इस तरह भारत को लोक संगीत व लोक संस्कृति की दृष्टि से एक समृद्ध देश माना जाता है। कथावस्तु के अनुसार इन लोकगीतों को दो प्रकार से विभाजित किया जा सकता है - महापुरुषों की जीवनियों, पौराणिक एवं ऐतिहासिक कथानकों संबंधी गीत तथा दूसरा, अवसर विशेष पर सामूहिक रूप से गाए जाने वाले गीत। प्रथम प्रकार के गीत कहानियों के रूप में लोग गायक सुनाते हैं, इनमें भूतहरि, हीर राङ्घा, मूमल, ढोला मारु, बाबा रामदेव के कथानक आदि हैं। इस प्रकार लोक संगीत में लोक वृत्य, लोकनाट्य व लोक वाद्य की संगति की त्रिवेणी है। लोक संगीत गायकों की आदिवासी जातियों में भील, मीणा, गरसिया कालबेलिया प्रमुख हैं। यह विविध लोक वाद्यों की संगति से मिलकर स्त्री पुरुष वृत्य करते हैं। पहाड़ी संगीत के उदाहरण, गोरबंद, पणिहारी, पिपली, मूमल, केघड़ा, कुरजा आदि हैं। त्योहारों पर गणगौर, तीज, सिंजारा, चौमासा, हिंडोला आदि हैं तथा प्रकृति संबंधी गीतों में फाग, हिंडोला, रसिया, होरी, मल्हार आदि हैं लोक देवताओं की स्तुति हेतु भेरुजी, भोमिया जी, गणेश जी, बालाजी, तेजाजी, रामदेव जी तथा पितरों संबंधी विषय वस्तु के गीत गाए जाते हैं इन सभी गीतों की संगति विविध लोक वाद्यों द्वारा की जाती है जिनमें जंतर, रावणहत्या, भपंग, कमाइचा, मशक, बंकिया, मोर चंग, ढोल, मॉदल, चंग, खंजरी, ढोलक, नौबत, खड़ताल, मंजीरा थाली आदि तत् एवं सुषिर वाद्यों द्वारा होती है। हमारे राज्य सरकार एवं केंद्र सरकार ने पर्यावरण में लोक संस्कृति एवं लोक कलाओं के संरक्षण हेतु सराहनीय प्रयास किए हैं। लंगा मांगणियार, मीणा व गरसिया आदि जातियों के पुनर्स्थापना एवं देश- विदेश में उनके कार्यक्रमों की प्रस्तुतीकरण का आयोजन, इनमें प्रमुख हैं।

लोक कला एवं लोक संगीत हमारे सांस्कृतिक मूलाधार हैं जिन्हें पूर्णरूपेण संचित करके हम संस्कृति के विशाल वृक्ष की छाया का पूर्ण रूप आनंद ले सकते हैं।



प्रोफेसर (डॉ) सीमा सक्सेना
आचार्य, राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर।

ब्रज की होरी

भारत के त्यौहारों में सर्वप्रिय त्यौहार होली का जिक्र आते ही, हम सभी के मन में एक अलग ही अहसास, मस्ती और धमाल का अनुभव होता है। होली का नाम आते ही ब्रज की होरी का जिक्र ना हो तो ये असंभव सी बात है। ब्रज क्षेत्र उत्तर प्रदेश प्रान्त के पश्चिमी क्षेत्र में आता है। ब्रज क्षेत्र हमारे आराध्य, हमारे इष्ट “श्री कृष्ण व राधा” की लीला स्थली रहा है। ब्रज की होली नर-नारियों द्वारा खेली जाने पर भी श्री राधा कृष्ण की होली कहलाती है। जितने भी पद या रसिया मिलते हैं, वे सभी ब्रज की होली में गांव-गांव में गाए जाते हैं। सभी के रचनाकार भक्त कवि हैं।



फागु परम्परा- वृत्याभिनय से परिपूरित वंसतोत्सव की लोकधर्मी परम्परा में फाग-गायन के प्रचलन का उल्लेख भी प्राप्त होता है। संस्कृत के ‘फल्लु’ शब्द से विकसित फग्गु अथवा फागु, फाग शब्द पद आख्यान, वार्ता आदि साहित्य की विविध विधाओं के समान ही ऐसे गीतियों का बोधक माना जाता सकता है, जिनकी विषयवस्तु अपने वास्तविक परिधान में छंद विशेष में लिखी जाती रही है और उनका प्रयोग अभिनय से संबंधित वृत्य प्रदर्शन में किया जाता था। फागु की यह गेय परम्परा वृत्याभिनय से युक्त लोकधर्मी परम्परा की शिल्प मूलक विशेषता को लेकर रास की समानधर्मी ही प्रतीत होती है। डा के.एम. मुंशी के मतानुसार बसन्त-वैभव से उल्लासित फाल्गुन में गेय रास-रचनाएँ ही ‘फागु’ नाम से प्रख्यात हुई। परवर्ती काल में वृत्याभिनय से युक्त फागु नाम की एक परम्परा अभिनय की व्यूनता के कारण गेय काव्य बनी। कृष्ण काव्य में फागु खेलने के विविध वर्णन उपलब्ध होते हैं। रास परम्परा के अनुरूप ही फागु रचनाओं के वृत्यात्मक प्रस्तुतीकरण में झांझा, पछावज आदि वाद्यों का उल्लेख मिलता है। प्रेमावन्द कृत ‘रास’ में ताली बजाकर फाग गायन का वर्णन हुआ है।



ब्रज की रास लीलाओं में आज भी अत्यन्त रूचि पूर्वक फाग गाया जाता है। रास मंच की होरी लीला तो पूर्ण रूप से फागों के आधार पर ही प्रदर्शित की जाती है। होरी की कथा- ब्रज क्षेत्र में मथुरा शहर से 40 किलोमीटर दूर श्री राधा रानी का गाँव है, जो कि बरसाना नाम से प्रसिद्ध है। बरसाने में रंगीली होली लगभग 5000 वर्षों से भी अधिक पुरानी है, इसका प्रमाण गर्ग संहिता में मिलता है। यह होरी लीला बरसाना में फागुन मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी से आरम्भ होती है। इस दिन बरसाने से पण्डे हांडी में गुलाल लेकर नन्द गाँव जाते हैं, जहाँ वो श्री कृष्ण जी को अगले दिन अर्थात् नवमी के दिन बरसाने आकर होली खेलने का निमन्त्रण देते हैं, वहाँ उनका बहुत स्वागत होता है और उन पण्डों के द्वारा समाज गायन में गारियों का गायन किया जाता है। रसिया के रूप में गाया जाने वाला एक गीत प्रचलित है- लाला तोइए बुलाय गई नथवारी..... अगले दिन नवमी को नन्द गाँव के पण्डे बरसाने आते हैं, रंग-बिरंगी पाग पहने और हाथों में ढाल लिए आते हैं, जो कि गैण्डे की खाल की बनी हुई होती है। बरसाने में पीली पोखर नामक स्थान पर उनकी बहुत खातिरदारी होती है, फिर वो ब्रह्माचल पर्वत पर स्थित श्री राधा रानी के मन्दिर का दर्शन करते हैं और उनका समाज फाग गायन करता है। ब्रज का “साखी” गायन भी प्रसिद्ध है- आए गए हुरियारे होरी के आये-गये हुरियारे.... बाहर निकस्यां री आंगन में, लाल खडे तेरे द्वारे.....

मन्दिर में बहुत गुलाल उड़ता है, वहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि रंग विस्तेर बादल उमड़ आए हैं। प्राकृतिक रंगों से होली खेली जाती है, जो कि टेसू के फूलों को भिंगो कर रंग बनाया जाता है, इस रंग को बड़ी-बड़ी पिचकारियों में भरकर नन्द गाँव के पण्डों पर खूब बरसाया जाता है। बरसाने में एक रंगीली गली है, जहाँ से नन्द गाँव के पण्डे मन्दिर से नीचे उतरते हैं और बरसाने की गलियों में फैल जाते हैं, तभी बरसाने की महिलाएं खूब सजधज कर, श्रृंगार कर, आभूषण आदि धारण कर हाथों में बांस के मोटे-मोटे लट्ठ लेकर उन पण्डों पर, जो ढाल लिए होते हैं, उन पर लट्ठ से बार करती हैं, जिससे वो ढाल से अपना बचाव करते हैं और इस प्रकार बरसाने की लट्ठमार होली आरम्भ होने के बाद सम्पूर्ण विश्व में होली आरम्भ हो जाती है। इस लट्ठमार होली का बहुत ही सुन्दर सार है कि गोपियों को केवल कान्हा जी से ही होली खेलनी है, इसलिए सब सखियाँ श्री कृष्ण के सखाओं को लट्ठ मारकर भगा देती हैं।



ऐसे समय का एक रसिया प्रसिद्ध है - फाग खेलन बरसाने आए हैं नटवर नन्द किशोर..... घेर लई सब गली रंगीली, छाय रही सब छटा छबीली, ढप ढोल मृदंग बजाए है, बंशी की धनधोर.....लट्ठमार के समय का रसिया प्रसिद्ध है- सखी डट-डट के डण्डा चलावें..... ज्वाला होरी है हल्ला मचावें.....लट्ठमार होली का यह दृश्य बड़ा ही अनोखा है। नारी का बल यहाँ देखने को मिलता है। ब्रज की होली फाग नहीं है, यह केवल पुरुष प्रधान नहीं है, यहाँ तो राधा रानी का राज चलता है, प्रधानता श्री राधा की ही है। ब्रज की होली खेलते तो पुरुष और स्त्री ही है, परन्तु उनमें भाव कृष्ण और राधा का रहता है। यही कारण है कि ब्रज की होली की पवित्रता बनी रहती है। ब्रज की होली का रंग कृष्ण और राधा की होली का रंग है। फिर भी होली तो होली है, जब श्री कृष्ण ने सखी की आँखों में जानबूझ कर पिचकारी की धार मार दी तो सखी कह उठी- नैनन में पिचकारी दई..... मोय गारी दई, होरी खेली न जाए..... श्री कृष्ण जी गोरी को अपने नैनों के इशारों से ही मार डाल रहे हैं तो एक रसिया है- मत मारे छगन की चोट.....रसिया होरी में मेरे लग जाएगी। होली की लीलाओं में ही एक लीला है, जिसमें सखि सखियाँ श्री कृष्ण को पकड़ लेती हैं और उन्हें काजल, बिन्दी, मांग में टीका, पैरों में पायल, लंहगा फरिया, ओढ़नी पहना कर उन्हें नारी बना देती हैं और रसिया गाती है- रसिया को नार बनावोंरी, होरी में..... ब्रज की होरी साधारण नहीं असाधारण है। होरी का एक



डा. कविता सक्सेना
सहायक आचार्य- नृत्य,
राजस्थान संगीत संस्थान, जयपुर

हिंदी फ़िल्म संगीत के रोचक किसे....

जब जावेद अख्तर ने सिंफ़ नौ मिनट में लिख दिया थे सुपरहिट गीत

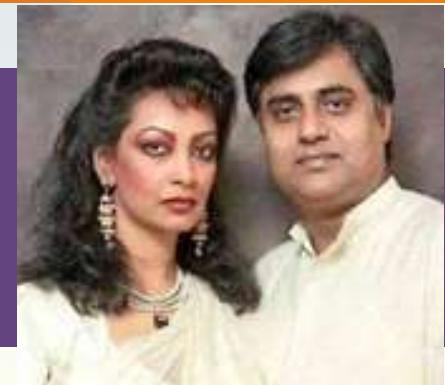
किस्सा है 1982 का, गीतकार जावेद अख्तर ने तब तक गीत लेखक के तौर पर एक ही फ़िल्म 'सिलसिला' के गीत लिखे थे (उससे पहले वे सलीम खान के साथ केवल फ़िल्म की कहानी और पटकथा लिखा करते थे सलीम-जावेद के नाम से)। सिलसिला के निर्माता निर्देशक यश चौपड़ा के सहायक थे रमन कुमार। उन्होंने जावेद जी से नियेदन किया कि मैं भी एक छोटी सी फ़िल्म बना रहा हूँ, अगर आप उसमें गीत लिख देंगे तो बहुत अच्छा रहेगा, लेकिन मैं यश जी जितने पैसे तो नहीं दे सकूंगा। जावेद जी ने उनकी बात मान ली और गाने लिखने को राज़ी हो गये। फ़िल्म का संगीत दे रहे थे कुलदीप सिंह। जावेद जी ने फ़िल्म के सारे गाने लिख दिए, बस एक गाना रह गया था।



जावेद जी कहते हैं कि उन दिनों, मैं शराब बहुत पीने लगा था (हांलाकि, बाद में उन्होंने हमेशा के लिए छोड़ दी) रोज़ शाम को निर्देशक रमन कुमार आ जाते, रात के एक दो बजे तक बैठे रहते और जावेद जी उन्हें ये कहकर टालते रहते कि 'कल लिखूंगा'। ये सिलसिला करीब 8-9 दिन तक चलता रहा, एक दिन आखिर जावेद जी ने आधी रात को

काशा-पैन मगवाया और लेखना शुरू किया। केवल नौ मिनट में एक खूबसूरत गीत लिख डाला। वो फ़िल्म थी 'साथ-साथ' और गीत था 'तुमको देखा तो ये ख्याल आया, जिंदगी धूप तुम घना साया'। इसे आवाज़ दी ग़ज़ल सम्राट जगजीत सिंह जी और उनकी पत्नी चित्रा सिंह जी ने। गीत बहुत सुंदर बना और खूब मशहूर हुआ। जावेद जी बताते हैं कि ये गाना उन्होंने केवल 9 मिनट में इसलिए लिखा कि निर्देशक को रात में वापसी के लिए ट्रेन पकड़नी थी। ये किस्सा जावेद अख्तर जी ने एक साक्षात्कार में सुनाया जिसका लिंक यहां दिया गया है।

<https://youtu.be/w-04S9T8Ulw?feature=shared>



Dr. Gaurav Jain

Renowned vocalist and Associate. Prof.
Music Vocal, Rajasthan Sangeet
Sansthan, Jaipur

लोकरंग...

उडीसा का लोक वाद्य “तुईला”



तुईला:- यह कपास, बांस और तुमड़ी से निर्मित एक तार वाला दुर्लभ वाद्य यंत्र है जो उडीसा में पाया जाता है। इसे गायन के साथ संगति के लिये उडीसा के “भूमिजा” नामक समुदाय द्वारा उपयोग किया जाता है। यह वाद्य एक आधी कटी हुई तुमड़ी का अनुवादक जो बांस की छड़ी से ढिलाई से बंधा होता है। एक सूती (कपास) की डोरी छड़ी के एक छोर से जुड़ी होती है और एक दूसरे छोर तक बांधी जाती है। इस वाद्य यंत्र को बजाते वक्त तुमड़ी को छाती पर रखकर तार को दाएं हाथ से खींचा जाता है।

इस वाद्य की ध्वनि सुनने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर लिंक करें

<https://youtu.be/f0-6Qa8alhQ?si=rHJ8eWlbpv3oxICn>

किताबों की बातेः♦♦♦

TITLE OF BOOK: THE STORY OF INDIAN

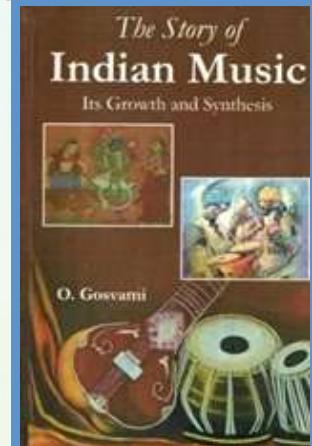
MUSIC- Its growth and synthesis.

AUTHOR: O. GOSWAMI

PUBLISHER: SHUBHI PUBLICATIONS,
GURGAON

LANGUAGE: ENGLISH

EDITION: 2023



Lately, there has been a growing interest in Indian Music among the music-loving society across the world. This book about Indian classical music addresses this large section and the increasing number of intelligent enthusiasts who wander to the innumerable musical stores and conferences held all over the country for good music. In this book, the author has explained the terms used by the musicians and has discussed the principles underlying their practices, as no work of art can be truly enjoyed till one experiences that sense of possession. It creates sudden effects on the human mind and the senses. The book deals with every aspect of Indian Music, ragas, the classification of ragas, raginis, evolution of musical forms, Hindustani music, Carnatic music, raga & rasa, and also the Indian musical instruments. This book will be a great help to the students of music and the researchers.

NEWS & EVENT....

1. पंडित विजय किचलू जी की स्मृति में कार्यक्रम



कोलकाता की संगीत पियासी संस्था द्वारा अपने 32 वर्ष की यात्रा का उत्सव मनाते हुए पद्मश्री स्वर्गीय पंडित विजय किचलू जी की स्मृति में दिनांक 1 दिसंबर से 4 दिसंबर 2023 तक सांगीतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया गया जिसमें पद्मभूषण बेगम परवीन सुल्ताना (शास्त्रीय गायन) विदुषी शुभ्रा गुहा (शास्त्रीय गायन) श्री शुभज्योति गुहा (तबला वादन) श्रीमती रूपा श्री भट्टाचार्य (हारमोनियम) पंडित पार्थ घोष (सितार) पंडित विश्व घोष (तबला) पंडित फाल्नुवी मित्र (ध्रुपद गायन) आदि की प्रस्तुतियां हुईं।

2. तीन दिवसीय ITC संगीत सम्मेलन 2023 में पंडित हरिप्रसाद



आईटीसी संगीत रिसर्च अकैडमी कोलकाता में दिनांक 8 दिसंबर 2023 से 10 दिसंबर 2023 तक प्रतिष्ठित तीन दिवसीय आईटीसी संगीत सम्मेलन 2023 का आयोजन किया गया। इन तीन दिवसों में संगीत रिसर्च अकादमी के गुरुजनों, विद्यार्थियों सहित देश के कई प्रतिष्ठित कलाकारों की संगीत प्रस्तुतियां हुईं। पंडित अजय चक्रवर्ती, पंडित साजन मिश्रा, सारांश मिश्रा, पंडित उदय भवलकर, श्रीमोह आचार्य, कलापिनी कोमकली, मोपली चौधरी आदि का शास्त्रीय गायन तथा प्रत्यूष बनर्जी का सरोद वादन, अमान हुसैन का सारंगी वादन, पंडित विश्व मोहन भट्ट व सलिल भट्ट का मोहन एवं सात्त्विक वीणा वादन आदि कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे। प्रत्येक वर्ष आयोजित किए जावे वाले आईटीसी संगीत सम्मेलन में आईटीसी सम्मान प्रदान किया जाता है। 2023 का आईटीसी सम्मान सुप्रसिद्ध बांसुरी वादक पंडित हरिप्रसाद चौरसिया जी को प्रदान किया गया।

3. तीन दिवसीय भातखंडे संगीत उत्सव का आयोजन



भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय, लखनऊ के कलामंडपम प्रेक्षागृह में दिनांक 19 दिसंबर से 21 दिसंबर 2023 तक तीन दिवसीय भातखंडे संगीत उत्सव मनाया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों के साथ पुरस्कार वितरण कार्यक्रम भी संपन्न हुआ। तीन दिवसीय इस उत्सव में रंजना गौहर के समूह द्वारा ओडिसी नृत्य, कथक गुरु पंडित जय किशन महाराज के निर्देशन में दरबार ए सलामी नामक सामूहिक कथक नृत्य प्रस्तुति, केडिया बंधु की सितार एवं सरोद जुगलबंदी तथा प्रख्यात लोक गायिका पद्मश्री मालिनी अवस्थी का शास्त्रीय एवं उप शास्त्रीय गायन कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण रहे।

4. जयपुर के जवाहर कला केंद्र में संपन्न हुई ध्रुपद कार्यशाला



देश की विख्यात महिला ध्रुपद गायिका प्रोफेसर मधु भट्ट तैलंग जी द्वारा 28 नवंबर 2023 से 14 दिसंबर 2023 तक ध्रुपद गायन शैली पर कार्यशाला का संचालन किया गया। दिनांक 14 दिसंबर 2023 को कार्यशाला का समापन प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे प्रतिभागियों की प्रस्तुति द्वारा हुआ जिसमें प्रोफेसर भट्ट द्वारा परिकल्पित राग चारूधरा एवं पंडित लक्ष्मण भट्ट तैलंग जी द्वारा रचित 6 मात्रा की नई ताल अद्वा चौताल में निबंध ध्रुपद रचना की सामूहिक प्रस्तुति हुई। कार्यशाला में लगभग 115 प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया।

5. जयपुर के जवाहर कला केंद्र में हुई सितार एवं सरोद की जुगलबंदी



कला संसार मधुरम के तहत दिनांक 22 दिसंबर 2023 को संगीत, साहित्य व रंगमंच के तीन दिवसीय उत्सव के अंतर्गत डॉ प्रसेनजीत सेनगुप्ता एवं डॉ विनायक शर्मा द्वारा सरोद एवं सितार की सुरमयी जुगलबंदी प्रस्तुत की जिसमें आप दोनों ने राग विहार, राग मिश्र समाज सहित अन्य रागों की धुनों से युक्त प्रस्तुतियां दी। साथ ही पंडित आनंद वैद्य ने राग जोग एवं राग देश की शास्त्रीय बंदिशों का मनमोहक गायन प्रस्तुत किया।

6. एक साथ 1600 से अधिक तबला वादकों की थाप से सज गया ताल दरबार



दिनांक 25 दिसंबर 2023 को ज्वालियर (मध्य प्रदेश) के ऐतिहासिक दुर्ग पर तालसेन समारोह में 1600 से अधिक तबला वादकों के सामूहिक तबला वादन ने ताल दरबार सजा दिया। इसी के साथ ज्वालियर का नाम गिरीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया तथा मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव जी ने 25 दिसंबर को तबला दिवस मनाने की घोषणा भी की।

संगीत वन्दन के पाठक भारतीय संगीत से जुड़े किसी भी विषय पर
अपना Original Article ,हिंदी या English में
E-Mail कर सकते हैं ।

हम अगले अंक में उसे सम्मिलित करने का पूर्ण प्रयास करेंगे।

DOC /WORD format
हिंदी - Mangal, Laila /Unicode font

English - Times New Roman

Email - vandansangeet@gmail.com

Mobile/Whatsapp - 9664257501

For more details, Visit our website

www.sangeetvandan.in

 Facebook Page

<https://www.facebook.com/profile.php?id=100090183618512&mibextid=ZbWKwL>

 Instagram

<https://instagram.com/sangeet.vandan?igshid=ZDdkNTZiNTM=>

 Twitter

<https://twitter.com/vandansangeet?t=joYXnoPU8HxpDxhOd1mu4Q&s=08>

 Youtube

<https://youtube.com/@SangeetVandan>

GUIDELINES

Articles submitted for publication should be solely original and unpublished

All individuals listed as author or co-authors must make substantial contributions and approve the final version of the article to be published.

The contribution of other individuals/ organizations or sources should be recognized as per law.

Authors are responsible for any copyright clearance, factual inaccuracies and opinion expressed in their paper.

The editorial board will review article and the approved/recommended articles shall be published in the upcoming issues.

The views expressed in the articles are the views of author/authors. It is not essential for editorial board members to be in agreement or disagreement. The sole responsibilities of the views expressed in article are of the author/authors.

All decisions regarding members of Advisory board, Editorial board, Review board, Referee will rest with Editor-in -Chief.